<u>स्मृतिशेष – आचार्य रामनाथ सुमन</u>

आचार्य रामनाथ सुमन आदर्श स्वयंसेवक थे –

अशोक सिंहल

भावी पीढ़ी को वेदों का विशिष्ट उपहार दिया आचार्य सुमन ने

चंपतराय

विश्व हिन्दू परिषद के पूर्व केन्द्रीय मंत्री तथा भारत संस्कृत परिषद के संस्थापक महामंत्री आचार्य रामनाथ सुमन का 15 अप्रैल को मध्यरात्रि उनके पिलखुवा स्थित आवास पर देहांत हो गया। उनका जन्म 20 जुलाई 1926 को ग्राम धौलाना, जिला गाजियाबाद में हुआ था। ओज के प्रख्यात कवि तथा निबंध लेखक सुमन जी पिछले कुछ समय से अस्वस्थ थे।

सुमन जी प्रख्यात संस्कृत विद्वान थे। वे अनेक वर्ष तक राजपूत शिक्षा शिविर इंटर कालेज में अध्यापक तथा राणा शिक्षा शिविर डिग्री कालेज के कार्यवाहक प्राचार्य रहे। प्राचार्य रहते हुए भी वे अपने गांव से प्रतिदिन साइकिल से ही 10 किमी. दूर स्थित विद्यालय आते–जाते थे। युवावस्था में जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी कृष्णबोधाश्रम तथा स्वामी करपात्री जी महाराज के सान्निध्य में उन्होंने सनातन धर्म के प्रचार–प्रसार में योगदान दिया। प्रारम्भ में वे खानपान में स्वपाकी और स्वपात्र रखते थे; पर संघ में सक्रिय होने पर वे इन सब बंधनों से मुक्त होकर पूर्णतः समरस हो गये।

उनकी विद्वता के कारण उन्हें उ.प्र. संस्कृत संस्थान का अध्यक्ष बनाया गया। बाणभट्ट रचित संस्कृत ग्रंथ कादम्बरी के शुकनाशोपदेश नामक अध्याय पर की गयी उनकी टीका की सर्वत्र सराहना हुई। यह टीका अब मेरठ विवि. के पाठ्यक्रम में लगी है। उनकी संस्कृत सेवाओं के लिए वर्ष 2000 में राष्ट्रपति ने उन्हें सम्मानित किया। वर्ष 2001 में उन्हें उ.प्र. सरकार का 51,000 रु. का पुरस्कार प्राप्त हुआ। हिन्दी तथा संस्कृत में जब वे धाराप्रवाह बोलते थे, तो श्रोता सम्मोहित हो जाते थे। न केवल देश में अपितु अमरीका तथा ब्रिटेन आदि देशों में उन्होंने हिन्दू दर्शन पर प्रभावी व्याख्यान दिये।

रा.स्व.संघ में सक्रिय होने के कारण उन्हें आपातकाल में जेल जाना पड़ा। हापुड़ तहसील तथा गाजियाबाद जिले के वे कई वर्ष संघचालक रहे। अवकाश प्राप्ति के बाद वे विहिप के केन्द्रीय कार्यालय, दिल्ली में रहकर संस्कृत के प्रचार–प्रसार में लग गये। वे लम्बे समय तक परिषद के केन्द्रीय मार्गदर्शक मंडल के संयोजक रहे।

स्थानीय चंडी मंदिर श्मशान गृह में सुमन जी के पुत्र डा. वागीश दिनकर ने उन्हें मुखाग्नि दी।

नई दिल्ली ! विश्व हिन्दू परिषद् के केन्द्रीय मार्गदर्शक मंडल के सदस्य भारत संस्कृत परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुप्रसिद्व कवि व संस्कृत विद्वान आचार्य रामनाथ सुमन

का 83 वर्ष की आयु में धौलाना गााजियाबाद में दीर्घकालिक अस्वस्थता के बाद देहावसान हो गया।

आचार्य सुमन की स्मृति में संकटमोचन आश्रम रामकृष्णपुरम् नई दिल्ली में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में `बोलते हुए विश्व हिन्दू परिषद् के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक सिंहल ने कहा कि मेरी बहुत इच्छा थी कि मैं उनके दर्शनों के लिए जाऊं किन्तु मैं स्वयं अस्वस्थ था लेकिन मुझे क्या पता था कि उनकी अंत्येष्टि में ही शामिल होना पड़ेगा। आचार्य रामनाथ सुमन बड़े आदर्श स्वयंसेवक थे। एक बार स्वामी निश्चलानन्द जी विहिप और संघ के विषय में कुछ टिप्पणी कर रहे थे तो उन्होंने विनम्रता से स्वामी जी से कहा कि मैं एक कार्यकर्ता हूं, आपके सम्मुख कुछ नहीं कह सकता किन्तु करपात्री महाराज जी का शिष्य होने के नाते हमने उनके आदर्शों और सिद्धांतों को आचरण में ढाला है। इस प्रकार स्वयंसेवक के रूप में कैसा आदर्श दिखाना है यह उन्होंने निश्चलानन्द जी को बताया। एक बार अयोध्या से लौटते हुए बस दुर्घटना से वे अत्यधिक चोटग्रस्त हो गये थे। हम लोगों को उनके बचने की आशा नहीं थी लेकिन हमने उनसे कहा कि आपका शेष जीवन विश्व हिन्दू परिषद् में लगना चाहिए।

श्री सिंहल ने कहा कि मैंने ऐसी प्रतिभा अपने जीवन में नहीं देखी, वे वक्तृत्व के धनी थे, विहिप की धर्मसभाओं और संत सम्मेलनों में पहले संचालन संत ही करते थे किन्तु बाद में लगातार सुमन जी ने ही यह कार्य किया। उनकी विद्वत्ता और विनम्रता के कारण सभी संत संतुष्ट रहते थे, वे संत समाज में लोकप्रिय थे। उन्होंने स्वयंसेवकों के लिए प्रेरणा देने वाला काव्य लिखा, जिससे स्वयंसेवकों में स्फुरण होता था, उनका खून खौलने लगता था। वास्तव में वे एक महापुरुष हैं, इस रूप में हमने उन्हें कभी नहीं देखा। अपने विषय के वे विशेषज्ञ थे। वेद विद्यालयों के विस्तार और दो बड़े वेद सम्मेलनों के आयोजनों में उनकी विशेष भूमिका थी। वे आध्यात्मिक पुरुष थे और इसी क्षमता के कारण उन्हें जीवन में सम्मान और प्रेम मिला। इतने अद्‌भुत विद्वान होने के बाद भी आचार्य सुमन में लेशमात्र अहंकार नहीं था। भारतवर्ष के सारे विद्वान् उनका लोहा मानते थे। संघ की प्रार्थना में विद्यमान विश्व को विनम्र करने वाला स्वभाव उनमें साकार दिखाई पड़ता था। अपने जीवन में मैंने तो विद्वता और विनम्रता का ऐसा सामंजस्य नहीं देखा। भारत संस्कृत परिषद् में पहले महामंत्री और फिर कार्याध्यक्ष के नाते डेग्वेगर जी के साथ उन्होंने बड़े – बड़े संस्कृत के सम्मेलन किए। उनकी दिनचर्या अनुकरणीय थी, प्रातःस्मरण से लेकर रात्रि विश्राम तक संघ के किसी कार्यक्रम को वे छोड़ते नहीं थे। हमारे बीच में वे हमेशा एकरस और समरूप होकर रहे। शारीरिक रूप से अशक्त होकर ही वे हमारे इस परिसर से गए। मैंने बीमारी के समय उनको कई पत्र लिखे और उन्होंने भी उत्तर दिए। उनके जीवन के अनुकरणीय पहलू हैं, पूरे विद्वत्समाज में उनका नाम था, हमें उनकी स्मृति में एक स्मृति ग्रंथ तैयार करना होगा ।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान के निदेशक वरिष्ठ पत्रकार श्री तरुण विजय ने कहा कि गीता का श्लोक – यद्यदाचरति श्रेष्ठस्ततदेवेत्तरो जनः, स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते। आचार्य सुमन इस भाव के मूर्तिमंत प्रतीक थे। मेरा और उनका सम्बन्ध लगातार 20 वर्षों तक रहा। वे हमेशा पांचजन्य के विशेषांकों के लिए कविताएं लिखते थे। राष्ट्रीयता के तत्व को कविता के लिए आवश्यक मानते हुए वे कहते थे – हम युद्धभूमि में हैं और युगधर्म है कि हम आग्नेय कविता का सृजन करें। आग्रही हिन्दुत्व को बिना किसी संकोच और क्षमाभाव के पुनः प्रस्फुटित करने की आवश्यकता है।''

श्री तरुण विजय ने कहा कि आचार्य सुमन भारतीय वाङ्मय, इतिहास और व्याकरण के अद्‌भुत मनीषी थे। उनको अमर करने के लिए उनकी काव्यधारा और अनुकरणीय विनम्रता काफी है। उनके व्यक्तित्व के अनेकविध पहलू थे। उनकी स्मृति, उनका भाव और आग्नेय कवि का रूप प्रत्येक भारतीय हिन्दू को प्रेरित करता रहेगा।

विश्व हिन्दू परिषद् के परार्मशक मंडल के सदस्य आचार्य गिरिराज किशोर ने कहा कि आचार्य सुमन के जीवन के मानवीय पहलू भी अनुकरणीय हैं। जब वह उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष बने तो उन्होंने कभी सरकारी गाड़ी का प्रयोग नहीं किया। जहां तक संस्कृतभाषा की बात है तो इसके सम्मान व प्रतिष्ठा के लिए वे कई बार क्रोधित भी हो जाते थे। नई–नई बातों की वे खोज करते थे।

विश्व हिन्दू परिषद् के संगठन मंत्री श्री दिनेश जी ने कहा कि जब मैं देहरादून में जिला प्रचारक कथा, उस समय हरिद्वार में साधु संतों के कार्यक्रम में मेरी सुमन जी से भेंट हुई। जब मैं आगरा में विभाग प्रचारक था तो गुरुदक्षिणा के कार्यक्रम में वक्ता के रूप में हमने उन्हें कई बार बुलाया। समय–समय पर हम उनके साथ त्योहारों और संस्कारों पर चर्चा करते थे और वैज्ञानिकता के साथ वे समाधान करते थे। उनकी एक विशेषता यह भी थी कि वे प्रश्नों से परेशान नहीं होते थे, धार्मिक जगत, साहित्य जगत और हमारे संगठन के लिए उनके द्वारा किए गए कार्य अद्वितीय हैं। उनकी स्मृतियां हमें सदैव प्रेरणा देती रहेंगी।

हिन्दू विश्व के संपादक श्री ओंकार भावे ने कहा कि वे देश के मूर्धन्य चिंतक थे। विचार भिन्नता होने पर भी वे मृदुता के साथ संकेत करके सीखने की प्रेरणा देते थे। उनकी बहुत सी बातों तक हम पहुंच ही नहीं सकेंगे। इतने बड़े होने पर भी वे सभी के आत्मीय थे। अपनी चोट व तकलीफ की चिंता किए बिना वे दूसरों की चिंता करते थे। विहिप के संपूर्ण कार्य के ऊपर उन्होंने एक विशेष छाप छोड़ी, हम उनके व्यवहार का अनुकरण करें, यही उन्हें सही श्रद्धांजलि होगी।

संत समाज के समन्वयक श्री जीवेश्वर मिश्र ने कहा कि आचार्य सुमन लगभग 12 वर्षों तक (1991 से 2003) केन्द्रीय मार्गदर्शक मंडल के संयोजक रहे। आचार्य

महामण्डलेश्वर सहित सभी आचार्यों से उनका संबंध रहा। शंकराचार्य लोग जब अपने वक्तव्य में किसी श्लोक को उद्धृत करते थे तो बाद में सुमन जी से पूछते थे कि उच्चारण में कोई गड़बड़ी तो नहीं थी, उनके व्याकरण और उच्चारण की यह महिमा थी। इस सबके कारण परंपरागत शास्त्र की भी रक्षा हुई। विनम्रता उनमें पराकाष्ठा पर थी। ज्ञान के साथ अहंकार जुड़ता है लेकिन सुमन जी सामान्य कर्मचारी से लेकर किसी बड़े व्यक्ति तक किसको कैसे संबोधित करना है, उनमें यह अद्भुत कला थी।

विहिप के संयुक्त महामंत्री श्री चंपतराय ने कहा कि वेद सम्मेलन की भूमिका या धरातल आचार्य सुमन के प्रयत्नों से ही संभव हुआ। पहले सम्मेलन में प्रयाग में अधिकांशतः दक्षिण के वेदज्ञ ही आए थे और जो काशी से आए थे वे भी महाराष्ट्र मूल के थे। उत्तर भारत में तो कर्मकांड के 25–50 मंत्र रटकर ही वेद जान लेने की बात होती थी, किन्तु वेद की प्रत्येक शाखा को कंठस्थ किया जाए इसीलिए यहां वेद विद्यालय प्रारंभ किया गया। आचार्य सुमन सर्वप्रथम अपने परिवार के कुछ बच्चों को ही यहां वेद विद्यालय के लिए लाए। यह वेद विद्यालय इसी कार्यालय से प्रारम्भ हुआ और आज उत्तर प्रदेश में 7–8 स्थानों पर शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिनी शाखा के मंत्रों को कंठस्थ करने वाले योग्य लोग अयोध्या, वाराणसी, हरिद्वार में सत्यमित्रानन्द गिरी जी और चिन्मयानंद जी के यहां भी हमारे वदे विद्यालय चल रहे हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वेद अगर भगवान हैं, मंत्र अगर द्रष्टा हैं तो यह पुण्य का कार्य सारे भारतवर्ष में प्रसारित कर आचार्य रामनाथ सुमन ने भावी पीढ़ी को भी विशिष्ट उपहार प्रदान किया है।

आचार्य रामनाथ सुमन की शोकसभा का संचालन करते हुए भारत संस्कृत परिषद् के महामंत्री आचार्य राधाकृष्ण मनोड़ी ने कहा कि आचार्य सुमन जैसे महान मनीषी का सान्निध्य 20 वर्षों तक मुझे मिलता रहा, अंतिम क्षणों तक वे चिन्ता करते रहे। 1984 से 1990 तक हमारा परस्पर पत्राचार संस्कृत कविता में ही होता था। उनकी मान्यता थी– ''आत्मनं सः न जानाति यो न जानाति संस्कृतः।'' वे संस्कृतानुरागी व्यक्ति को कम से कम व्याकरण के चार सूत्रों के व्युत्पत्तिपरक उत्तर अवश्य समझाते थे और किसी भी शास्त्रीय विषय का विवेचन करने में सिद्धहस्त थे। भारत संस्कृत परिषद् के महामंत्री और राष्ट्रीय अध्यक्ष रहते हुए वे 1992 से लेकर 2004 तक आयोजित सभी संस्कृत व्यवहार शिविरों में निरंतर उपस्थित रहे। भारतवर्ष की जितनी भी संस्थाएं थीं वे सभी जगह जाते थे। वे हमेशा करपात्री जी के सिद्धांतों पर चले। कादम्बरी का एक भाग जिस पर उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार मिला था, आज मेरठ विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में है वह उनकी प्रतिभा का परिचायक है।

इस शोकसभा में विभिन्न संस्कृत विद्वनों, धर्माचार्यों एवं संस्कृतानुरागियों सहित विश्व हिन्दू परिषद् के धर्म प्रसार प्रमुख श्री धर्मनारायण शर्मा, सामाजिक समरसता समन्वयक श्री रामफल सिंह व भारत संस्कृत परिषद् के राष्ट्रीय संयोजक श्री सूर्यप्रकाश सेमवाल ने भी आचार्य सुमन को श्रद्धांजलि अर्पित की।